ज्ञान परंपरा और प्राचीन हिंदी साहित्य (सिद्ध, नाथ, जैन, रासो)

मालती ए. एम.

हिन्दी विभागाध्यक्ष, आर.एन.एस.एफ.जी.सी., बेंगलूर.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15795944

ABSTRACT:

भारतीय ज्ञान परंपरा और हिंदी प्राचीन साहित्य के बीच गहरा संबंध है। हिंदी साहित्य, भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करता है, जैसे कि वेदों, उपनिषदों और अन्य प्राचीन ग्रंथों से प्रेरित होकर हिंदी साहित्य ने इन ज्ञान परंपराओं को संरक्षित, प्रचारित और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य में सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य प्रमुख धार्मिक साहित्य के रूप में शामिल हैं। ये तीनों साहित्य अपने-अपने धर्मों के प्रचार-प्रसार और आध्यात्मिक अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए लिखे गए थे। सिद्ध साहित्य में सरहप्पा, शबरप्पा जैसे सिद्धों द्वारा रचित रचनाएँ हैं, जो बौद्ध धर्म के तांत्रिक मार्ग से प्रभावित हैं। नाथ साहित्य में भगवान शिव के उपासक नाथों द्वारा रचित रचनाएँ हैं, जो गुरु महिमा, योग और हठयोग पर बल देती हैं। हिंदी साहित्य परंपरा का मुख्य उद्देश्य आत्मा को ऊँचा उठाना, मनुष्य के गुणों को परिष्कृत करना, और उसे आनंद की अवस्था में पहुँचाना है। साहित्य अतीत से जीवन मूल्यों को आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने में सेतु का काम करता है। यह मनुष्य को उसके कर्तव्यों और दायित्वों से परिचित कराता है और उसे समाज और राष्ट्र के प्रति जागरूक करता है। हिंदी साहित्य परंपरा का परिचय हिंदी भाषा के साहित्यिक इतिहास को दर्शाता है, जो संस्कृत और अपभ्रंश भाषाओं से विकसित हुआ है। यह साहित्य विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे गद्य, पद्य और चम्पू में रचा गया है और इसमें भक्ति, प्रेम, ज्ञान, और श्रृंगार जैसे विषयों को दर्शाया गया है। हिंदी साहित्य को आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल जैसे विभिन्न कालों में विभाजित किया गया है।

KEYWORDS:

सिद्ध, नाथ, जैन, रासो, संस्कृत, हिन्दू, आस्था, इतिहास, राष्ट्र, समाज, हिंदी, योग, साधना, परंपरा, साहित्य, संत, प्रचार आदि.

सिद्ध परंपरा: सिद्ध संप्रदाय या सिद्ध परंपरा हिंदू धर्म और योग परंपराओं में एक महत्वपूर्ण परंपरा है। "यह परंपरा उन योगियों, साधकों और संतों की वंशावली है जिसे ब्रजयानी साहित्य भी कहा जाता है।"[1] एक प्रकार का हिंदी साहित्य है जो ८४ सिद्धों द्वारा लिखा गया है। ये सिद्ध भारत के पूर्वी भाग में सक्रिय थे। साहित्य में सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य प्रमुख धार्मिक साहित्य के रूप में शामिल हैं। ये तीनों साहित्य अपने-अपने धर्मों के प्रचार-प्रसार और आध्यात्मिक अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए लिखे गए थे। सिद्ध साहित्य में सरहप्पा, शबरप्पा जैसे सिद्धों द्वारा रचित रचनाएँ हैं, जो बौद्ध धर्म के तांत्रिक मार्ग से प्रभावित हैं। नाथ साहित्य में भगवान शिव के उपासक नाथों द्वारा रचित रचनाएँ हैं, जो गुरू महिमा, योग और हठयोग पर बल देती हैं। सिद्ध साहित्य में अर्द्ध-मागधी अपभ्रंश का प्रयोग हुआ है, जिससे आगे चलकर पूर्वी हिंदी भाषा का विकास हुआ।

नाथ साहित्य: शिव के उपासकों, जिन्हें नाथ कहा जाता है। "यह साहित्य नाथ पंथ या योग-साधना पर आधारित है, जिसमें हठयोग और तंत्र की साधना पर जोर दिया गया है।"[2] भगवान शिव के उपासक नाथों द्वारा जो साहित्य रचा गया, वही नाथ साहित्य कहलाता है। ये लोग ईश्वरवादी थे और गुरू महिमा, योग, हठयोग और पिण्ड-ब्रह्माण्डवाद पर बल देते थे। नाथों के आध्यात्मिक अनुभवों, योग की साधना और शिव के प्रति उनकी भक्ति का वर्णन है। अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया गया है, जो सिद्ध साहित्य से मिलती-जुलती है। नाथ साहित्य में नाथों के आध्यात्मिक अनुभवों, योग की साधना और शिव के प्रति उनकी भक्ति का वर्णन है।

जैन साहित्य: यह एक प्राचीन और विशाल साहित्यिक परंपरा है, जो मुख्य रूप से संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं में लिखी गई है। इसमें धार्मिक ग्रंथ, पुराण, चरित, कथाएँ और रास काव्य शामिल हैं। "जैन टीकाकार साहित्य आगमों में पाए जाने वाले शिक्षाओं की व्याख्या और विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।"3 जैन साहित्य जैन धर्म के सिद्धांतों और आचार्यों की शिक्षाओं का वर्णन करता है। इसमें जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथों, जैसे कि श्रावकाचार, सम्मिसुत्तं (सन्मतिसूत्र) आदि शामिल हैं। अहिंसा, संयम, त्याग, और मोक्ष की प्राप्ति के लिए विभिन्न साधनों का वर्णन किया गया है। प्राकृत भाषा का प्रयोग किया गया है, जो अपभ्रंश भाषा से मिलती-जुलती है।

रासो साहित्य: जिसे वीरगाथात्मक साहित्य भी कहा जाता है, हिंदी साहित्य के आदिकाल की एक महत्वपूर्ण रचना है, जो वीर, प्रेम और युद्ध के वर्णन पर केंद्रित है। यह साहित्य मुख्य रूप से पश्चिमी हिंदी क्षेत्र में विकसित हुआ था जहाँ राजपूत राजाओं के आश्रय में रहने वाले कवि इसका लेखन करते थे। रासो साहित्य में वीर रस की

प्रधानता है, जिसमें राजाओं और उनके सैनिकों के पराक्रम, युद्धों और विजय का वर्णन किया गया है। इन रचनाओं में प्रेम और श्रृंगार रस का भी चित्रण है, जो अक्सर युद्ध और वीरता के साथ-साथ दिखाया गया है। रासो साहित्य में पुरुषों को वीरता और शक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है, जबकि महिलाओं को अक्सर प्रेम और श्रृंगार से संबंधित दिखाया गया है। ये रचनाएं मुख्य रूप से चारण और भाट कवियों द्वारा लिखी गई हैं, जो राजपूत राजाओं के आश्रय में रहते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। कवि चन्दबरदाई द्वारा रचित, यह पृथ्वीराज चौहान के जीवन और कार्यों का वर्णन करता है। इसमें बीसलदेव और राजमती के प्रेम और वियोग की कथा है। रासो साहित्य हिंदी साहित्य के आदिकाल की एक महत्वपूर्ण रचना है, जो उस समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश को दर्शाता है। यह वीर रस और प्रेम की परंपरा को आगे बढ़ाता है और हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

परिणाम: हिंदी साहित्य की परंपरा का परिणाम व्यापक है, जिससे हिंदी भाषा और साहित्य का विकास हुआ है। यह परंपरा विभिन्न काल, साहित्यिक रूपों, और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों से प्रभावित है। इसका परिणाम हिंदी साहित्य में विविधता और विकास का प्रदर्शन है।

निष्कर्ष: हिंदी साहित्य परंपरा का निष्कर्ष यह है कि यह एक गतिशील और विकसित होने वाली परंपरा है, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। इसका विकास कालक्रम के साथ-साथ साहित्य में भी बदलाव लाता है, और यह साहित्यिक प्रवृत्ति का प्रतिबिंब होता है। आदिकालीन सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन साहित्यों में भारतीय समाज की विभिन्न आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का प्रतिबिंब दिखाई देता है। इन साहित्यों ने हिंदी भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हिंदी साहित्य परंपरा का निष्कर्ष यह है कि यह एक गतिशील और विकसित होने वाली परंपरा है, जो विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। इसका विकास कालक्रम के साथ-साथ साहित्य में भी बदलाव लाता है, और यह साहित्यिक प्रवृत्ति का प्रतिबिंब होता है।

Reference:

1. हिंदी साहित्य में सामासिक संस्कृति के तत्त्व -डॉ. शिवनंदन प्रसाद - भारतकोश, ज्ञान का हिंदी महासागर
2. डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, भारतीय साहित्य, पृष्ठ सं. 65
3. डॉ. अरुणा रानी, जैन धर्म की स्थायी विरासत : भारतीय संस्कृति और विचार पर इसका प्रभाव, पृष्ठ सं. 204

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.